International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 3 Jan-Feb 2024

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना

डॉ. शीला सालवी

सहायक आचार्य पैसिफिक कॉलेज ऑफ टीचर्स एजूकेशन, पैसिफिक विश्वविद्यालय, प्रताप नगर, उदयपुर (राज.)

Corresponding Author – डॉ. शीला सालवी

Email: 997@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.10726192

सारांश

बालक की पहली पाठशाला 'घर होता है। और पहली शिक्षिका माँ होती है। लेकिन यदि बालक का सम्पूर्ण विकास करना हो तो हम स्कूल को प्राथमिकता देते हे विद्यालय के बीना बालक अपना विकास नही कर सकता विद्यालय ही दूसरा सबसे प्रभावशाली परिर्वतन है जिससे कि बालक का संपूर्ण विकास होता है बालक के सामाजिक स्तर को विकसिक करने के लिए विद्यालय की प्रमुख भूमिका से ही बालक का विद्यालय के माध्यम से सर्वंगिक विकास होता है तथा वह अपने जीवन में प्रभावी ढंग से सिख पाते हैं

कीवर्ड: शिक्षा, शैक्षणिक विकास, क्षमता, कोशल, प्रभाव, विद्यालय, अध्ययन, परिवर्तन

प्रस्तावना

कोई भी विद्यालय बिना शैक्षणिक गतिविधियों के अधुरा है क्योंकि विद्यालय ही एक एसा स्थान है। जहाँ पर व्यक्ति शिक्षा प्रप्त कर अपने राष्ट्र का विकास करता हे समाज के विकास के लिए शिक्षा एक प्रमुख तत्व के रूप में कार्य करती हे साथ ही वह विद्यार्थियों का सर्वागिण विकास में सहायक होती है शिक्षा के तीन प्रमुख अंग होते हे शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम तथा शिक्षक जिसके कि हर अंग एक दूसरे का पूरक हैं शिक्षा एक ऐसी सामाजिक तथा गतिशील प्रक्रिया जो की जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है एक सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाती है तथा व्यक्ति को उसके कर्त्तव्य का बोध कराते हुए उसक विचार तथा व्यवहार में समाज हेतु कल्याणकारी परिवर्तन लाती है

समस्या कथन: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना

अध्ययन का उद्देश्य

1 माध्यमिक स्तर के विद्यालय के बालकों की शैक्षणिक योग्यता का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यालय के बालको की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना

परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र छात्रा विद्यालय के बालकों की शैक्षणिक योग्यता के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है
2. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र छात्रा की शैक्षणिक स्तर के प्रभाव का कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध हेतु न्यादर्श –

न्यादर्श का उपयुक्त चयन प्रत्येक शोधकार्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है, किसी भी शोधकार्य की विश्वसनीयता व वैधता न्यादर्श पर ही आधारित होती है। न्यादर्श के द्वारा किसी बड़े समूह से व्यक्तियों अथवा प्रेक्षणों का उपसमूह प्राप्त किया जाता है और बड़ी समष्टि की विशेषताओं के बारे में अनुमान लगाने के बारे में उसका अध्ययन किया जाता है। स्तरप्रस्तुत शोध में बडगांव क्षेत्र के माधमिक विदयालय के कुल 60 माध्यमिक विद्यालय के बालकों का चयन किया गया है।

अनुसंधान की विधियां –

किसी भी शोधकार्य में अध्ययन विधि का चयन करना सबसे महत्वपूर्ण है। अध्ययन विधि अनुसंधान की आधारशिला होती है, इस अध्ययन हेतु निम्नलिखित विधि को लिया गया - सर्वेक्षण विधि, अवलोकन विधि, साक्षात्कार विधि।

तथ्य संकलन के उपकरण:

किसी भी शोध के लिए आवश्यक है कि - विशेष प्रकार के न्यादर्श हेतु विशेष प्रकार का उपकरण निर्मित किया जाए। प्रस्तुत शोध का विषय बालको की शैक्षणिक की वर्तमान स्थिति के अध्ययन से जुड़ा

हुआ है, इस संदर्भ में कोई उपयुक्त मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं है, अतः शोध सम्बन्धित क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधकर्त्री ने स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया। शोधकर्त्री द्वारा समस्या से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बाद सम्बन्धित क्षेत्रों का चयन किया गया। इनमें कथनों को पांच विकल्प दिए गए। प्रश्नावली निर्माण के पश्चात् विषय विशेषज्ञों पर पूर्व प्रशंसित कर कथनों की जाँच की गई। सभी कथनों के उत्तरों की प्राप्ति संतोषजनक थी। इसमें शोधकर्ती ने अपने आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकी में मध्यमान, मानक विचलन एवम टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है

तालिका 1

क्रम संख्या	विद्यार्थियों के प्रकार	पदो की संख्या	मद्यमान	मानक विचलन	क्रंतिक अनुपात
1	ग्रामीण छात्र	30	17.13	2.77	.056
2	ग्रामीण छात्रा	30	23.94	4.09	.047

उपरोक्त तालिका मे शेक्षणिक स्तर का शिक्षण का प्रभाव औसत अंको को दर्शाती है जो उत्तरदाता के शिक्षण से संबंधित है उनका औसत स्कोर छात्र 17.13 और छात्रा का 23.93 है छात्र का छात्रा से कम शैक्षणिक स्तर हे छात्र के शिक्षण प्रभाव को दर्शाती है की विभिन्न स्थितियो के बीच बेहतर दिखाते हैं इसका अर्थ है छात्र एवम छात्रा दोनो का शिक्षण स्तर मे अंतर पाया जाता है

तालिका 2

शैक्षणिक स्थिति मे विद्यार्थियों के प्रकार	पदो की संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	t मान
शहरीछात्र	30	19.01	3.50	0.49	6.42
शहरीछात्रा	30	22.16	3.47		

तालिका 2 से स्पष्ट होता है की छात्रों के शेक्षणिक लगाव और उनके निजी विद्यालय के शिक्षण कार्य के मध्य अंतर की सार्थकता - 16 हैं जो .01 स्तर पर आसर्थक है इससे स्पष्ट होता है की शहरि छात्र 19.01 ओर शहरी 22.16 छात्र के शैक्षणिक कार्य पर कोई प्रभाव नही पडता है शह्रि चत्र चत्र के शेक्शनिक स्तर के मद्य कोइ अंतेर कि हे

शैक्षिक निहितार्थ –

शोध से प्राप्त परिणामों से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए, जिनका यथोचित उपयोग राजस्थान के उदयपुर कि एक तेह्सिल के विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक स्थिति को बढ़ाया जा सकता है।माध्यामिक स्तर के अतिरिक्त अन्य स्तरों के विधार्थियो की उपलब्धि स्तर राजकीय विद्यालयऔर निजी विद्यालय के प्रति जागरूक का अध्ययन किया जा सकता है

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध

कार्य मे विश्लेषण के उपरांत पाया गया कि छात्रों के वास्तविक निर्माण में शिक्षण के प्रभाव का सार्थक प्रभाव पड़ता है तथा बालक के शैक्षणिक स्तर को शिक्षण कार्य का महत्व सार्थक रूप से स्पष्ट हो रहा है

उपसंहार -

उदयपुर शहर में माध्यामिक स्तर के बालक बालिका शेक्षणिक स्तर को सुधार कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास कर रही है, एक सराहनीय कार्य है। क्योंकि व्यक्ति का बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास शिक्षा द्वारा ही होता है। इन महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था।

प्रस्तुत शोध एक वर्णनात्मक अध्ययन है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधकर्त्री का प्रथम प्रयास है, अतः कुछ कमियों का रहना स्वाभाविक है। शोधकर्त्री शोधकार्य के आधार पर कुछ परिणाम निकालने में समर्थ रही, परन्तु यह कार्य विशाल समुद्र में से एक लोटा पानी अलग करने के समान तुच्छ है, फिर भी यह शोध भावी शोध हेतु कुछ उपयोगी बन जाए, ऐसी अभिलाषा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://books google.co.in/books
2. T.S. Mehts, et al. (Eqs), National Seminar on population Education, Delhi, N.C.E.R.T., 1970, p. 9.
3. Unesco workshop on population and family education report of an Asian regional office, 1971, p.34. प्रो. जोशी, ओ.पी. 'इण्डियन सोशल इन्स्टीट्यूशन' जयपुर नवम संस्करण
4. (4.)व्यक्तिगत शोध के आधार पर